❍ 05 / 11 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗अपनी बुधी की लाइन सदा क्लियर रखी ?∗

➢➢ ∗गृहस्थ व्यवहार से तोड़ निभायी ?∗

➢➢ ∗बड़ी दिल रख सेवा का प्रतक्ष्य फल निकाला ?∗

➢➢ ∗कारण को निवारण में परिवर्तित किया ?∗

────────────────────────

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ हर समय नवींनता का अनुभव करते औरों को भी नये उमंग-उत्साह में लाना। खुशी में नाचना और बाप के गुणों के गीत गाना। ∗मधुरता की मिठाई से स्वयं का मुख मीठा करते दूसरों को भी मधुर बोल, मधुर संस्कार, मधुर स्वभाव द्वारा मुख मीठा कराना।∗

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को पद्मापद्म भाग्यवान अनुभव करते हो? *सारे कल्प में ऐसा श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त हो नहीं सकता। क्योंकि भविष्य स्वर्ग में भी इस समय के पुरुषार्थ की प्रालब्ध के रूप में राज्यभाग्य प्राप्त करते हो। भविष्य भी वर्तमान भाग्य के हिसाब से मिलता है। महत्व इस समय के भाग्य का है।*

〰✧ *बीज इस समय डालते हो और फल अनेक जन्म प्राप्त होता है। तो महत्व तो बीज का गिना जाता है ना। इस समय भाग्य बनाना या भाग्य प्राप्त होना - यह बीज बोना है।*

〰✧ *तो इस अटेन्शन से सदा पुरुषार्थ में तीव्रगति से आगे बढ़ते चलो और सदा इस समय के पद्मापद्म भाग्य की स्मृति इमर्ज रूप में रहे, कर्म करते हुए याद रहे कर्म में अपना श्रेष्ठ भाग्य भूले नहीं। स्मृतिस्वरुप रहो। इसको कहते हैं पद्मापद्म भाग्यवान।* इसी स्मृति के वरदान को सदा साथ रखना, तो सहज ही आगे बढ़ते रहेंगे, मेहनत से छूट जायेंगे।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

>> *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

.˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦

.˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

.˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦

〰✧ जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियाँ आपके कन्ट्रोल में हैं। आँख को वा मुख को बंद करना चाहो तो कर सकते हो। ऐसे मन और बुद्धि को उसी स्थिति में स्थित कर सको जिसमें चाहो। *अगर फरिश्ता बनना चाहें तो सेकण्ड में फरिश्ता बनो - ऐसा अभ्यास है या टाइम लगता है?*

〰✧ क्योंकि हलचल जब बढ़ती है तो ऐसे समय पर कौन-सी स्थिति बनानी पडेगी? आकारी या निराकारी। साकार देहधारी की स्थिति पास होने नहीं देगी, फेल कर देगी। अभी भी देखो - *किसी भी हलचल के समय अचल बनने की स्थिति 'फरिश्ता स्वरूप' या 'आत्म-अभिमानी' स्थिति ही है।*

〰✧ यही स्थिति हलचल में अचल बनाने वाली है। तो क्या अभ्यास करना है? आकारी और निराकारी। जब चाहें तब स्थित हो जाएँ - *इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पडे, सिर्फ अमृतवेले नहीं।* बीच-बीच में यह अभ्यास करो। (पार्टियों के साथ)

.˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

.˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦ ••☆••✧˚◦

———————————————

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अभी अलबेलेपन का समय नहीं है। बहुत समय अलबेला पुरुषार्थ किया।* अब जो किया सो किया। फिर यह स्लोगन याद दिलायेंगे जो आप लोग औरों को सुनाते हो- 'अब नहीं तो कब नहीं'। *अगर अब न करेंगे तो फिर कब करेंगे? फिर कब हो नहीं सकेगा। इसलिए स्लोगन भी याद रखना*

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)

(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- गृहस्थ व्यवहार में रहते तोड़ निभाकर, एक बार बेहद का सन्यास कर 21 जन्म की प्रालब्ध बनाना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा तालाब के किनारे बैठ खिले हुए कमल कुन्ज देख देख हर्षित हो रही हूँ... हौले-हौले मस्ती भरी हवाएं चल रही है...* बरखा की मधुर फुहारें नए-नए साज गाकर सुना रही हैं... सफ़ेद, गुलाबी रंगत लिए ये कमल ऐसे लग रहे जैसे तालाब के पानी में राज करे रहे हों... एकदम साफ़ उजले

उजले कमल एक बूंद कीचड या पानी भी अपने ऊपर ठहरने नहीं देते हैं... अपने मुस्कुराते मन कमल को बाबा को अर्पित करने मैं आत्मा पहुँच जाती हूँ प्यारे वतन...

❊ *प्यारे ज्ञान सूर्य बाबा अपने ज्ञान किरणों की बूंदों से मेरे मन कमल को भिगाते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वरीय राहो पर चलकर फूलो जैसा मुस्कराता खुशनुमा जीवन पाओ... ऐसी खुबसूरत खुशियो से दामन सजाने वाले प्यारे बाबा पर दिल जान से बलिहार जाओ... *ईश्वर पिता पर रोम रोम से कुर्बान जाओ... एक बार बेहद का सन्यास कर 21 जन्म के मीठे सुखो की तकदीर को सहज ही पा लो..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा हद के संबंधों से तोड़ निभा एक बाबा से सर्व संबंधो का रस लेते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे प्यारे बाबा... मैं आत्मा आपको पाकर अनन्त खुशियो को बाँहों में भर गई हूँ... प्यारे बाबा आपकी सारी दौलत सारे खजाने अपने नाम कर ली हूँ... *सच्चे दिल से बलि होकर कखपन देकर 21 जनमो की अमीरी पाने वाली महा भाग्यवान सज गयी हूँ..."*

❊ *मीठे बाबा विषय विकारों के कीचड़ से मुझ आत्मा को बाहर निकाल कमल फूल समान पवित्र बनाते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वर पिता के साथ के यह मीठे पल खुबसूरत यादो से छलकाओ... और देवताई ताजो तख्त ईश्वर पिता से अपने नाम लिखवाओ... सच्चे प्रेम में बलि हो, ईश्वर पिता पर अपना पूरा पूरा अधिकार जमाओ... *21 जनमो के सच्चे सुखो के खातिर यह एक जनम ईश्वर पिता को सौंप दो... गृहस्थ व्यवहार में रहते सबसे तोड़ निभाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा संगम की इन सुहावनी घड़ियों को प्यारे बाबा के नाम करते हुए कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा सुख और शांति की खोज में किस कदर दर दर भटक रही थी... प्यारे बाबा आपने तो सुखो का समन्दर ही मेरे नाम कर दिया है... *आपको पाकर तो मैंने सारा जहान पा लिया है... यह कौड़ी तुल्य जीवन सौंप कर हीरों से दामन सजा लिया है..."*

❇ *प्यारे बाबा मुझे रूहानियत से भरपूर कर पद्मापदम् भाग्यवान बनाते हुए कहते है:-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... ईश्वर पिता को दुखो में व्याकुल होकर जो पुकार रहे थे... वह मीठा बाबा अखूट खजानो को हथेली पर सजा, उपहार सा लाया है... *एक बार ऐसे पिता पर पूरा पूरा बलिहार जाओ... अधूरा नही, जितना ईश्वरीय दिल पर मर मिटोगे... उतनी सुखो की दौलत से मालामाल रहोगे..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा के इस अमूल्य ज्ञान की चाबी से 21 जन्मों के श्रेष्ठ भाग्य की प्रॉपर्टी अपने नाम करते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा देहधारियों पर मर मिटकर जो खाली और निष्प्राण हो गई थी... *आज मीठे बाबा आप मनमीत को पाकर, सच्चे दिल से अर्पण हो गई हूँ... गुणो और शक्तियो की दौलत पाकर, असीम धनदौलत को पा गई हूँ... 21 जनमो का शानदार भाग्य पाकर निहाल हो गयी हूँ..."*

———————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- आस्तिक बन सबको आस्तिक बनाना है*"

➳ _ ➳ स्वयं को आस्तिक समझने वाले, भगवान को जानने का दावा करने वाले, भगवान की बड़ी - बड़ी महिमा करने वाले बड़े - बड़े महा मंडलेश्वर, साधू सन्यासी भी वास्तव में भगवान को ना जान सके और ना ही पहचान सके किन्तु *अति साधारण दिखने वाली जिन चन्द आत्माओं ने भगवान बाप को पहचान लिया वास्तव में वो ब्राह्मण बच्चे ही सही अर्थ में आस्तिक हैं*। एकांत में बैठ मन ही मन चिंतन करती, अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की मैं सराहना करती हूँ कि कितनी पदमापदमा सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जिसे भगवान ने स्वयं आकर ज्ञान का वो तीसरा नेत्र दिया जिससे भगवान को पहचान कर मैं सही मायने में आस्तिक बन गई।

➳ _ ➳ जैसे भगवान बाप ने ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर अज्ञान अन्धकार से मुझे निकाल कर आस्तिक बनाया ऐसे ही मुझे भी अज्ञान अन्धकार में भटक रही आत्माओ को परमात्म ज्ञान देकर सोझरे में लाना है ताकि वो भी परमात्मा को पहचान सकें और सही अर्थ में आस्तिक बन सके। *मन ही मन स्वयं से मैं जैसे ही यह प्रतिज्ञा करती हूँ वैसे ही परमात्म ब्लैसिंग बाबा की सर्वशक्तियों की अनन्त शक्तिशाली किरणो के रूप में सीधे
परमधाम से मुझ आत्मा पर बरसने लगती हैं*। ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे बाबा इस ईश्वरीय सेवा के लिए मुझ में असीम बल भर कर मुझे बलशाली बना रहे हैं। परमात्म प्रेम और परमात्म शक्तियों का मेरे अंदर गहराई तक समावेश हो रहा है।

➳ _ ➳ स्वयं को मैं बहुत ही लाइट और माइट अनुभव कर रही हूँ। मेरी यह लाइट और माइट स्थिति मुझे देह से डिटैच कर रही है। स्वयं को मैं देह में विराजमान किन्तु देह से एकदम अलग अनुभव कर रही हूँ। *एक अति प्यारी साक्षी स्थिति में स्थित हो कर मैं अपने शरीर रूपी रथ को और अपने आस पास की हर वस्तु को देख रही हूँ किन्तु इन सबके आकर्षण से मैं पूर्णतया मुक्त हूँ*। साक्षी हो कर इन सबको मन बुद्धि के नेत्रो से देखते हुए अब मै इन सबसे किनारा कर ऊपर आकाश की ओर उड़ चलती हूँ। *कुछ सेकंड की एक अति सुंदर रूहानी यात्रा को पूरा करके मैं अपने पिता के घर, निराकारी आत्माओं की दुनिया में आ पहुँचती हूँ*। यहाँ पहुंच कर मन को गहन शान्ति और सुकून का अनुभव हो रहा है।

➳ _ ➳ ऐसा लग रहा है जैसे मैं अपनी मंजिल पर पहुँच गई हूँ। मेरे बिल्कुल सामने, शांति, सुख, प्रेम, आनन्द, शक्ति, ज्ञान और पवित्रता के सागर मेरे शिव पिता विराजमान है और अपनी सर्वशक्तियों की किरणों रूपी बाहों को फैला कर मेरा आह्वान कर रहें हैं। *अपने शिव पिता की और तीव्र गति से बढ़ती हुई मैं आत्मा उनकी किरणो रूपी बाहों में जा कर समा जाती हूँ*। अपनी किरणों रूपी बाहों के आगोश में लेकर बाबा अपनी असीम शक्ति मेरे अंदर भर रहें हैं। स्वयं को मैं बहुत ही बलशाली, बहुत ही एनर्जेटिक अनुभव कर रही हूँ। *बाबा अपने सर्व गुण, सर्व शक्तियाँ मेरे अंदर प्रवाहित कर मुझे आप समान बना रहें हैं*।

➳ _ ➳ भरपूर होकर अब मैं ईश्वरीय सेवा अर्थ वापिस साकार लोक की ओर लौट रही हूँ। आस्तिक बन सबको आस्तिक बनाने की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए अपने ब्राह्मण तन में विराजमान हो कर अब मैं अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली सभी आत्माओं को परमात्मा का सत्य ज्ञान, सत्य परिचय दे रही हूँ। *वे आत्मायें जो भगवान को पाने के लिए भक्ति के व्यर्थ के कर्मकाण्डों में फंस कर अपने समय और एनर्जी को वेस्ट कर रही हैं उन्हें सत्य ईश्वरीय मार्ग दिखा कर, परमात्म पहचान दे कर, परमात्मा को याद करने की यथार्थ विधि बताकर उन्हें भक्ति के व्यर्थ के कर्मकांडो से मुक्ति दिलाकर आस्तिक बना रही हूँ*।

➳ _ ➳ *स्वयं आस्तिक बन सबको आस्तिक बनाना इसी ईश्वरीय सेवा अर्थ मुझे यह ब्राह्मण जीवन मिला है इस बात को स्मृति में रख यह परमात्म सेवा अब मैं निरन्तर कर रही हूँ*।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं बड़ी दिल रख सेवा का प्रत्यक्षफल निकालने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव कारण को निवारण में परिवर्तित कर देती हूँ ।*
✺ *मैं शुभ-चिंतक आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं शक्ति स्वरूप आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. आज बापदादा ने बच्चों की बातें बहुत सुनी हैं। बापदादा को हँसाते भी हैं, कहते हैं ट्रैफिक कन्ट्रोल 3 मिनट नहीं होता, शरीर का कन्ट्रोल हो जाता है, खड़े हो जाते हैं, *नाम है मन के कन्ट्रोल का* लेकिन मन का कन्ट्रोल कभी होता, कभी नहीं भी होता। *कारण क्या है? कन्ट्रोलिंग पावर की कमी। इसे अभी और बढ़ाना है।* आर्डर करो, जैसे हाथ को ऊपर उठाना चाहो तो उठा लेते हो। क्रेक नहीं है तो उठा लेते हो ना! *ऐसे मन, यह सूक्ष्म शक्ति कन्ट्रोल में आनी है। लाना ही है। आर्डर करो - स्टाप तो स्टाप हो जाए।* सेवा का सोचो, सेवा में लग जाए। परमधाम में चलो, तो परमधाम में चला जाये। सूक्ष्मवतन में चलो, सेकण्ड में चला जाए। जो सोचो वह आर्डर में हो। अभी इस शक्ति को बढ़ाओ। छोटे-छोटे संस्कारों में, युद्ध में समय नहीं गंवाओ, आज इस संस्कार को भगाया, कल उसको भगाया। *कन्ट्रोलिंग पावर धारण करो तो अलग-अलग संस्कार पर टाइम नहीं लगाना पड़ेगा।* नहीं सोचना है, नहीं करना है, नहीं बोलना है। स्टाप। तो स्टाप हो जाए। *यह है कर्मातीत अवस्था तक पहुंचने की विधि।*

➳ _ ➳ 2. इस अवस्था से सेवा भी फास्ट होगी। क्यों? एक ही समय पर *मन्सा शक्तिशाली, वाचा शक्तिशाली, संबंध-सम्पर्क में चाल और चेहरा शक्तिशाली। एक ही समय पर तीनों सेवा बहत फास्ट रिजल्ट निकालेगी* ऐसे

नहीं समझो कि इस साधना में सेवा कम होगी, नहीं। सफलता सहज अनुभव होगी। और सभी जो भी सेवा के निमित्त हैं अगर संगठित रूप में ऐसी स्टेज बनाते हैं तो मेहनत कम और सफलता ज्यादा होगी। तो विशेष अटेन्शन कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाओ। *संकल्प, समय, संस्कार सब पर कन्ट्रोल हो। बहुत बार बापदादा ने कहा है - आप सब राजे हो।* जब चाहो जैसे चाहो, जहाँ चाहो, जितना समय चाहो ऐसा मन बुद्धि ला और आर्डर में हो। आप कहो नहीं करना है, और फिर भी हो रहा है, कर रहे हैं तो यह ला और आर्डर नहीं है। *तो स्वराज्य अधिकारी अपने राज्य को सदा प्रत्यक्षस्वरूप में लाओ।*

➳ _ ➳ *तीन मास का अभ्यास सदाकाल का अनुभवी बना देगा।* अगर अपने उमंग-उत्साह से किया तो। मजबूरी से किया 3 मास पास करने हैं, फिर तो सदाकाल का नहीं होगा। *लेकिन उमंग-उत्साह से किया तो सदाकाल के लिए अनादि अविनाशी संस्कार इमर्ज हो जायेंगे।* समझा।

✺ *ड्रिल :- "कन्ट्रोलिंग पावर से कर्मातीत स्थिति प्राप्त करने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं संगमयुगी ब्राह्मण आत्मा... स्वस्थिति की ओर ध्यान केंद्रित करती हूँ... रोम-रोम प्रभु संग... आनंद मिलन... मंगल मिलन की कहानी सुना रहा है... कितनी श्रेष्ठ तकदीर की लकीर है... ईश्वर के साथ कभी उड़ रही हूँ... कभी खेल रही हूँ... तो कभी गा रही हूँ... ईश्वर ने स्वयं मुझ आत्मा का सर्वशक्तियों से श्रृंगार किया है... *सर्वशक्तियों व सर्वगुणों की रंगबिरंगी मणियाँ... मेरे मस्तक पर चमक रही हैं...* मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा... अपनी कंट्रोलिंग पावर का बढ़ते हुए अनुभव कर रही हूँ...

➳ _ ➳ *सूक्ष्म कर्मेंद्रियों को कंट्रोल करके... मैं आत्मा स्वराज्य अधिकारी बन गई हूँ...* सूक्ष्म शक्तियों को... परमधाम जाने का आर्डर करती हूँ... एक सेकेंड में ही ज्योतिस्वरूप... प्रकाशमय सितारा बन... परमधाम पहुंच जाता हूँ... स्वयं को शिव बाबा के सम्मुख अनुभव कर रहा हूँ... *गहरी शांति... लाखों सूर्य सा तेज... दिव्यता का सागर मेरे बाबा...* मुझ पर सर्वशक्तियों की सर्वगुणों की किरणें बरसा रहे हैं... भरपूर होता मैं सितारा... और भी जगमगाने लगा हूँ...

कुछ देर यहीं स्थित होकर... इस स्थिति का आनन्द ले रहा हूँ... अब अपनी पाँच तत्वों की इस देह में प्रवेश करता हूँ...

➳ _ ➳ मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा... अब अपने मन और बुद्धि को सूक्ष्मवतन में जाने का ऑर्डर देती हूँ... यह एक सेकंड में सफेद प्रकाश की... फरिश्तों की दुनिया में पहुँच जाता है... बापदादा से दृष्टि लेती हुई... सुखों की लहरों में समा जाती हूँ... *आंखें कान सभी... केवल बाबा को ही देख और सुन रहे हैं...* मन-बुद्धि... बाबा की श्रीमत पर ही चल रहे हैं... अब पाँच तत्वों की साकार दुनिया में... पार्ट बजाने के लिए आ जाती हूँ... *सर्व प्रकार की अधीनता समाप्त हो गई है... देह के दास से देह की मालिक बन कर...* सुख... शांति तथा सर्व गुणों से संपन्न हो रही हूँ...

➳ _ ➳ इन छोटी सी कर्मेंद्रियों के जाल के विस्तार को बिंदी लगा रही हूँ... बिंदी बन... बिंदी में ही सब समा रही हूँ... बेहोशी के जाल से... पूर्ण रुप से मुक्त हूँ... स्वतंत्र हूँ... माझी रूपी अधिकारी आत्मा बन... नैया को परीक्षाओं की लहरों से... खेलते खेलते मज़े से पार कर रही हूँ... जैसे चाहूँ वैसे ही... अपने स्थूल व सूक्ष्म शक्तियों को... कार्य में लगा रही हूँ... अधीनता के संस्कार को परिवर्तित कर... *मनसा, वाचा शक्तिशाली... चाल और चेहरा भी शक्तिशाली बन कर... सेवाओं में सफलतामूर्त अनुभव कर रही हूँ...*

➳ _ ➳ कर्मेंद्रियों की राज्य अधिकारी मैं आत्मा... अपनी राज्य सत्ता अनुभव कर रही हूँ... हर कर्मेंद्री जी हाज़िर... जी हजूर करते हुए... मेरी प्रजा बनकर सिर झुकाकर... मुझे सलाम कर रही है... *मैं राज्य अधिकारी... इन का दरबार हर रोज लगाती हूँ...* समय, संकल्प, संस्कार... सभी मुझ मास्टर सर्वशक्तिवान के कंट्रोल में है... शक्ति रूपी सेनानी सदा तैयार रहने से... उमंग उत्साह से भरपूर हूँ... *योगयुक्त रहकर कर्म करते हुए... कर्मों के बंधनों से मुक्त हो गई हूँ... कर्मातीत अवस्था का अनुभव कर...* कर्मातीत स्टेज के आसन पर विराजमान हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔